भारतेंदु &द्विवेदी युग

हिंदी साहित्य- राम कुमार मिश्रा

CODE- RAHI92
(use this code and
get 10% off)

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

भारतेंदु युग का काल-विभाजन एवं नामकरण

प्रस्तुतकर्ता	समय	नामकरण
रामचंद्र शुक्ल	1868 – 1893 ई.	नई धारा: प्रथम उत्थान
रामविलास शर्मा	1868 – 1900 ई.	नवजागरण
मिश्र बंधु	1869 – 1888 ई.	वर्तमान काल
राम कुमार वर्मा	1870 – 1900 ई.	आधुनिक काल

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

आधुनिक हिंदी कविता के प्रथम चरण को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर 'भारतेंदु युग' का नाम दिया गया है। नामकरण का आधार भारतेंदु हरिश्चंद्र का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व रहा। चूँकि भारतेंदु का जन्म सन् 1850 ई. में हुआ, इसलिये कई विद्वान आधुनिक काल का आरंभ 1850 ई. से स्वीकार करते हैं।

इस तरह हम मौटे तौर पर भारतेंदु युग का समय 1850 से 1900 ई. ('सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से पूर्व तक) तक मान सकते हैं।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

भारतेंदु युग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- **अंतर्विरोधों का साहित्य:** भारतेंदु युग में राष्ट्रभक्ति बनाम राजभक्ति, ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली तथा पारंपरिक संस्कार बनाम आधुनिक विचार के मध्य अंतर्विरोध पाया जाता है।
- **शृंगारिकता की चेतना:** इस काल में आधुनिकता की चेतना के बावजूद रीतिकालीन प्रभाव पूरी तरह छोड़ा नहीं जा सका। न्यूनाधिक इस युग के सभी कवियों ने शृंगारिक कविताएँ लिखी हैं।
- **भक्ति भावना:** यहाँ भक्ति के निर्गुण और सगुण दोनों रूप उपलब्ध होते हैं। यहाँ भक्ति का एक और व्यापक रूप उपलब्ध होता है जिसे 'स्वदेशानुराग समन्वित भक्ति' कहते हैं अर्थात् ईश्वर की भक्ति का उद्देश्य देश की समस्याओं को सुलझाना हो।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

समस्यापूर्ति: इस युग में 'कविता वर्द्धिनी सभा' तथा 'रसिक समाज' जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई थी जहाँ कवियों की गोष्ठियाँ होती थीं तथा नए कवियों को प्रोत्साहित किया जाता था। इस परंपरा में एक विषय तय किया जाता था और उसकी अंतिम पंक्ति तय होती थी। कवि अपनी प्रतिभा से उससे पहले की पंक्तियाँ लिखते थे। आशु लेखन की इस पद्धति को ही समस्यापूर्ति कहा गया है जो इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति रही। स्वयं भारतेंदु ने समस्या पूर्तियों को प्रोत्साहित किया।

- **सामाजिक समस्याओं का चित्रण:** इस युग का काव्य जन जीवन से जुड़ा है, अतः इसमें नारी शिक्षा, विधवा समस्या, बाल विवाह, धार्मिक संकीर्णता जैसे विषयों की ओर कवियों की दृष्टि गई। कवियों ने इन विकृतियों पर चोट करके समाज में नई चेतना पैदा की है।

भारतेंदुयुगीन रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ

कवि का नाम (ई. में)	कृतियाँ
भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850 – 1885)	आगे दी गई हैं।
बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855 – 1922)	1. जीर्ण जनपद 2. आनंद अरुणोदय 3. हार्दिक हर्षादर्श 4. मयंक महिमा 5. अलौकिक लीला 6. वर्षा बिंदु 7. लालित्य लहरी 8. बृजचंद पंचक
प्रतापनारायण मिश्र (1856 – 1894)	1. प्रेम पुष्पांजलि 2. मन की लहर 3. लोकोक्ति शतक 4. तृप्यंताम 5. शृंगार विलास 6. हरगंगा

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857 – 1899)	1. प्रेमसंपत्तिलता (1885 ई.) 2. श्यामलता (1885 ई.) 3. श्यामा सरोजिनी (1886 ई.) 4. देवयानी (1886 ई.) 5. ऋतु संहार (अनूदित–1876 ई.) 6. मेघदूत (अनूदित–1883 ई.)
अंबिकादत्त व्यास (1858 – 1900)	1. पावस पचासा (1886 ई.) 2. सुकवि सतसई (1887 ई.) 3. हो हो होरी (1891 ई.) 4. बिहारी बिहार (1898 ई.)
राधाचरण गोस्वामी (1859 – 1925)	1. नवभक्तमाल
राधाकृष्णदास (1865 – 1907)	1. भारत बारहमासा 2. देश दशा

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

भारतेंदु हरिश्चंद्र

- भारतेंदु हरिश्चंद्र उर्दू में 'रसा' उपनाम से शायरी लिखते थे।
- भारतेंदु ने लगभग 70 काव्य कृतियों की रचना की है।
- सन् 1880 ई. में 'सार सुधानिधि' नामक पत्रिका में हरिश्चंद्र को 'भारतेंदु' नामक उपाधि प्रदान करने का प्रस्ताव किया गया था। फलस्वरूप आम जनमानस ने उन्हें 'भारतेंदु' (भारतीय चाँद) की उपाधि से सम्मानित किया।
- भारतेंदु द्वारा स्थापित सभा एवं संस्थाएँ हैं– 1. कविता वर्द्धिनी सभा (1870 ई. काशी), 2. पेनी रीडिंग क्लब (1873 ई.) तथा 3. तदीय समाज (1873 ई.)।
- भारतेंदु की सभी काव्य रचनाएँ 'भारतेंदु ग्रंथावली' के प्रथम भाग में संकलित हैं।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

- भारतेंदु गद्य खड़ी बोली में लिखते थे परंतु कविता के लिये उन्होंने ब्रजभाषा को चुना।
- भारतेंदु की कविताओं में भक्तिपरक तथा शृंगारिक संवेदनाओं और नवजागरण के स्वर मिलते हैं।
- भारतेंदु की भाषा अति सरस, सहज और ब्रजभाषा की बहुत-सी रूढ़ियों से मुक्त हैं।
- उन्होंने 'दशरथ विलाप' तथा 'फूलों का गुच्छा' आदि कविताएँ खड़ी बोली में लिखी हैं।
- भारतेंदु ने 'विजयिनी विजय वैजयंती' (1882) शीर्षक कविता मिस्र में तत्कालीन भारतीय सेना की विजय प्राप्ति पर लिखी थी।
- 'नारद भक्ति सूत्र' तथा 'शांडिल्य भक्ति सूत्र' का अनुवाद भारतेंदु ने क्रमशः 'तदीय सर्वस्व' (1874 ई.) तथा 'भक्ति सूत्र वैजयंती' शीर्षक से किया है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

'रिपनाष्टक' (1884 ई.) नामक काव्य भारतेंदु ने 'लार्ड रिपन' की प्रशंसा में लिखा था।

भारतेंदु द्वारा 'पैरोडी', 'गाली', 'लावनी', 'स्यापा' आदि शैली में लिखी कविताएँ इस प्रकार हैं–

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाएँ

(1) भक्ति सर्वस्व, (2) प्रेम मालिका, (3) कार्तिक स्नान, (4) वैशाख, (5) माहात्म्य, (6) प्रेमाश्रुवर्षण, (7) जैन कुतूहल, (8) प्रेम माधुरी, (9) प्रेमतरंग, (10) उत्तरार्द्ध भक्तमाल, (11) प्रेम प्रलाप, (12) गीत गोविंदानंद, (13) सतसई शृंगार, (14) होली, (15) मधु मुकुल, (16) राग संग्रह, (17) वर्षा विनोद, (18) विनय प्रेम पचासा, (19) फूलों का गुच्छा, (20) प्रेम फुलवारी, (21) कृष्णचरित, (22) श्री अलवरत वर्णन, (23) श्री राजकुमार सुस्वागत-पत्र, (24) सुमनोऽञ्जलि, (25) श्री जीवनजी महाराज, (26) चतुरंग, (27) देवी छद्म लीला, (28) प्रातः स्मरण मंगलपाठ, (29) दैन्य प्रलाप, (30) उरेहना, (31) तन्मय लीला, (32) दान लीला, (33) रानी छद्म लीला, (34) संस्कृत लावनी, (35) वसंत होली, (36) स्फुट समस्याएँ, (37) मुँह दिखावनी, (38) उर्दू का स्यापा, (39) प्रबोधिनी, (40) प्रात समीरन, (41) बकरी विलाप, (42) स्वरूप चिंतन, (43) श्री राजकुमार

शुभागमन वर्णन, (44) भारत भिक्षा, (45) श्री पंचमी, (46) श्री सर्वोत्तम स्रोत, (47) निवेदन पंचक, (48) मान सोपायन, (49) प्रातः स्मरण स्रोत, (50) हिंदी की उन्नति पर व्याख्यान, (51) अपवर्गदाष्टक, (52) मनोमुकुल माला, (53) वेणु गति, (54) श्रीनाथ स्तुति, (55) मूक प्रश्न, (56) अपवर्ग पंचक, (57) पुरुषोत्तम पंचक, (58) भारत वीरत्व, (59) श्री सीतावल्लभ स्तोत्र, (60) श्री रामलीला, (61) भीष्म स्तवराज, (62) मान लीला फूल-बुझौअल, (63) बंदर सभा, (64) विजय वल्लरी, (65) विजयिनी-विजय-वैजयंती, (66) नये ज़माने की मुकरी, (67) जातीय संगीत, (68) रिपुनाष्टक, (69) स्फुट कविताएँ, (70) प्रिंस ऑफ वेल्स के पीड़ित होने पर कविता।

इस बार NET नहीं JRF लेना है। CODE:- RAH192

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

- बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की समस्त काव्य कृतियों का संकलन 'प्रेमघन-सर्वस्व' शीर्षक से किया गया है।
- 'प्रेमघन' उर्दू में 'अब्र' नाम से कविताएँ लिखते थे।
- **'प्रेमघन' ने दादा भाई नौरोजी के पार्लियामेंट के सदस्य चुने जाने पर हर्षपूर्ण तथा विलायत में उन्हें काला कहने पर क्षोभपूर्ण कविताएँ लिखी थीं।**
- भारतेंदु कृत 'पुरुषोत्तम पंचक' तथा 'बकरी विलाप' के अनुसरण पर 'प्रेमघन' ने क्रमशः 'वृजचंद पंचक' तथा 'पितर विलाप' शीर्षक कविताएँ लिखीं।
- 'आनंद अरुणोदय' शीर्षक इनकी कविता देशभक्ति की भावना से युक्त है।
- 'मयंक महिमा' इनकी खड़ी बोली हिंदी की रचना है।
- इनकी कविताओं में यति भंग प्रायः मिलता है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

प्रतापनारायण मिश्र

- 'प्रताप लहरी' इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है।
- हास्य-व्यंग्यात्मक कविताओं के क्षेत्र में प्रतापनारायण मिश्र का अग्रणी स्थान है।
- 'प्रेमघन' की भाँति इन्होंने भी लावनी शैली में अनेक कविताएँ लिखी हैं।
- इन्होंने 'हरगंगा', 'तृप्यंताम', 'बुढ़ापा', 'हिंदी की हिमायत' शीर्षक से महत्त्वपूर्ण कविताएँ लिखी हैं।
- इनकी 'मन की लहर' कविता में बाल विधवाओं की करुण दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है।
- इनकी देशभक्तिपरक कविताओं के व्यंग्य में अद्भुत मारक शक्ति है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

ठाकुर जगमोहन सिंह

- ठाकुर जगमोहन सिंह अपनी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति और प्रकृति चित्रण के लिये प्रसिद्ध हैं।
- इन्होंने शृंगार और प्रकृति-सौंदर्यपरक कविताओं की रचना की है। इनके द्वारा विंध्य क्षेत्र की प्रकृति का वैविध्यपूर्ण वर्णन हुआ है।
- अलंकारों का स्वाभाविक नियोजन भारतेंदु युग में सर्वाधिक इनमें दृष्टिगत होता है।
- इनके द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

अंबिकादत्त व्यास

- इन्होंने खड़ी बोली में 'कंस वध' (अपूर्ण) शीर्षक प्रबंधकाव्य की रचना की है।
- इन्होंने फारसी छंद में 'दशरथ विलाप' शीर्षक कविता खड़ी बोली में लिखी है।
- 'बिहारी-बिहार' नामक इनकी रचना में महाकवि बिहारी के दोहों का कुंडलिया छंद में भाव विस्तार किया गया है।
- भारतेंदु द्वारा स्थापित 'कविता वर्द्धिनी सभा' में 'पूरी अमी की कटोरिया-सी, चिरजीवी रहौ विक्टोरिया रानी' समस्या की पूर्ति करके अंबिकादत्त व्यास ने अपने काव्य लेखन की शुरुआत की। इस समस्यापूर्ति के फलस्वरूप इन्हें 'सुकवि' की उपाधि प्राप्त हुई।
- इन्होंने 'भारतधर्म' शीर्षक कविता में वर्णाश्रम का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया है। इस कविता में विदेशी वस्त्रों एवं अन्य वस्तुओं के आयात को भारत की आर्थिक बदहाली का मूल कारण बताया है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

राधाकृष्ण दास

- 'भारत बारहमासा' और 'देश दशा' समसामयिक भारत के विषय में इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं।
- इन्होंने रहीम के दोहों पर कुंडलियाँ छंद की रचना की है।
- द्विवेदी युग का नामकरण आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ है।
- द्विवेदी युग की समयावधि सामान्यत: 1900 से 1918 ई. तक मानी गई है।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने द्विवेदी युग का काल निर्धारण सन् 1893 से 1918 ई. तक करते हुए उसे 'नई धारा : द्वितीय उत्थान' के अंतर्गत रखा है।
- डॉ. नगेन्द्र ने द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' नाम दिया है।
- सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन वर्ष से द्विवेदी युग का आरंभ स्वीकार किया जाता है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAH192

- सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन सन् 1900 ई. में आरंभ हुआ तथा महावीरप्रसाद द्विवेदी 1903 ई. में इसके संपादक बने।
- सरस्वती पत्रिका के महत्त्व को रेखांकित करते हुए इसे 'बीसवीं शताब्दी के आरंभिक चरण का विश्वकोश' कहा गया है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

द्विवेदी युग की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- **राष्ट्रीयता की नवीन धारणा:** भारतेंदु युग की अनिश्चित राष्ट्रीयता से अलग राष्ट्रीय भावना, देशप्रेम, अतीत गौरव की भावना की अभिव्यक्ति हुई।
- **इतिवृत्तात्मकता:** अधिकांश रचनाएँ इतिवृत्तात्मक ढर्रे पर लिखी गईं।
- **नैतिकता एवं आदर्शवाद:** शृंगार भावना का विरोध करते हुए नैतिक मूल्यों पर बल दिया गया। द्विवेदी युग का काव्य समाज का आदर्श रूप लेकर चला।
- **विषयगत वैविध्य:** विषयों का अत्यधिक विस्तार हुआ।
- **साहित्य की सोद्देश्यता पर बल:** साहित्य को मनोरंजन और उपदेश का माध्यम स्वीकार करते हुए सोद्देश्य लेखन पर बल दिया गया।
- **काव्य रूप की विविधता:** खंडकाव्य, महाकाव्य प्रबंध रूपों के साथ प्रगीत-मुक्तकों की भी रचना हुई।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.)

रचनाएँ

1. मनोविनोद (1882 ई.)
2. गुनवंत हेमंत (1900 ई.)
3. जगत सचाई सार (1887 ई.)
4. कश्मीर सुषमा (1904 ई.)
5. देहरादून (1915 ई.)
6. भारतगीत (1928 ई.)
7. वनाष्टक
8. स्वर्गीय वीणा
9. धनविजय
10. सांध्य अटन (1918 ई.)

अनूदित रचनाएँ

अनूदित रचनाएँ	मूल रचना (मूल रचनाकार)	अनूदित भाषा
गड़ेरिया और दार्शनिक	शेफर्ड एंड फिलॉसफर (ग्रे)	
ऋतुसंहार	ऋतुसंहार (कालिदास)	ब्रजभाषा
एकांतवासी योगी (1886 ई.)	हरमिट (गोल्डस्मिथ)	खड़ी बोली
उजड़ग्राम (1989 ई.)	डेज़र्टेड विलेज (गोल्डस्मिथ)	ब्रजभाषा
श्रांत पथिक (1902 ई.)	ट्रैवलर (गोल्डस्मिथ)	खड़ी बोली

आयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.)

1. कृष्ण शतक
2. कबीर कुंडल
3. रसिक रहस्य
4. प्रेम प्रपंच
5. प्रेमांबु वारिधि
6. प्रेमांबु प्रश्रवण
7. प्रेमांबु प्रवाह
8. प्रेम पुष्पोपहार
9. काव्योपवन
10. ऋतु मुकुर
11. पद्य प्रमोद
12. पद्य प्रसून (1914 ई.)
13. उपहार
14. रसकलश
15. बोलचाल
16. चुभते चौपदे
17. चोखे चौपदे (1932 ई.)
18. फूल पत्ते
19. कल्पलता
20. ग्रामगीत
21. दिव्य दोहावली
22. हरिऔध सतसई
23. मर्म स्पर्श

प्रबंधकाव्य

1. प्रियप्रवास (1914 ई.) — 17 सर्ग
2. पारिजात (1940 ई.) — 15 सर्ग
3. वैदेही वनवास (1940 ई.) — 18 सर्ग

❑ मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्मस्थान	पिता	गुरु	प्रथम कविता	प्रथम काव्य संग्रह
चिरगाँव (झाँसी)	रामशरण दास	महावीरप्रसाद द्विवेदी	हेमन्त (1905 ई०)	रंग में भंग (1909 ई०)

❑ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित प्रमुख काव्य ग्रन्थ निम्नांकि हैं—

(1) रंग में भंग (1909 ई०), (2) जयद्रथ वध (1910 ई०), (3) किसान (1917 ई०), (4) विकट भट (1929 ई०), (5) गुरुकुल (1929 ई०), (7) साकेत (1931 ई०), (7) भारत-भारती (1912 ई०), (8) झंकार (1929 ई०), (9) यशोधरा (1932 ई०), (10) द्वापर (1936 ई०), (11) जय भारत (1952 ई०), (12) विष्णु प्रिया (1957 ई०), (13) सिद्धराज (1936 ई०), (14) हिन्दू (1927 ई०), (15) वैतालिक, (17) पंचवटी (1925 ई०)।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

- हिन्दी साहित्य में 'रामचरितमानस' के बाद रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' है।
- मैथिलीशरण गुप्त को 'साकेत' रचना की मूल प्रेरणा सन् 1908 ई० में सरस्वती पत्रिका में महावीरप्रसाद द्विवेदी के लेख 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' से मिली। यह लेख महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपने छद्म नाम 'भुजंग भूषण भट्टाचार्य' नाम से प्रकाशित कराया।
- 'साकेत' शब्द मूलत: पालि भाषा का शब्द है जिसका अर्थ अयोध्या है। इसमें 12 सर्ग है। इसे डॉ० नगेन्द्र ने 'जनवादी काव्य' कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गुप्तजी को 'सामंजस्यवादी कवि' कहा है।
- मैथिलीशरण गुप्त को 'भारत-भारती' रचना की मूल प्रेरणा 'मुसद्दसे हाली' तथा ब्रजमोहन दत्तात्रेय कैफी कृत 'भारत दर्पण' पुस्तक से प्राप्त हुई।
- मैथिलीशरण गुप्त ने स्वयं को 'कौटुंबिक कविमात्र' कहा है। इन्हें 'भारत भारती' लिखने पर महात्मा गाँधी ने **राष्ट्रकवि** की उपाधि दी।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

- मैथिलीशरण गुप्त द्वारा अनूदित काव्य निम्नांकित हैं—
  (1) प्लासी का युद्ध, (2) मेघनाथ वध, (3) वृत्र संहार।
- मैथिलीशरण गुप्त ने बांग्ला कवि माइकेल मधुसूदन दत्त की रचनाओं का 'मधुप' उपनाम से अनुवाद किया।
- गुप्तजी ने मार्क्स की पुत्री 'जैनी' पर 'जयिनी' नामक काव्य लिखा है।
- गुप्तजी को द्विवेदी काल में 'हरिगीतिका' छंद का बाादशाह कहा जाता है।

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (1883-1972 ई.)	1. प्रेमपचीसी 2. कुसुमांजलि	3. कृषकक्रंदन 4. राष्ट्रीय वीणा	5. त्रिशूल तरंग 6. करुणा कादंबिनी
रूपनारायण पांडेय (1884-1959 ई.)	1. पराग (1924 ई.) 2. वन वैभव	3. दलित कुसुम 4. वनविहंगम	5. आश्वासन
रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)	खंडकाव्य 1. मिलन (1917 ई.) 2. पथिक (1920 ई.)	3. स्वप्न (1929 ई.) 4. मानसी (फुटकर कविताओं का संग्रह-1927 ई.)	

इस बार NET नहीं JRF लेना है! CODE:- RAHI92

Keep up good work....!

THANK YOU FOR LOVE AND RESPECT..... ☺

Chhayavad Revision
By
Ram Kumar Mishra

(7) नारी सिच्छा निरादरत जे लोग अनारी।
ते स्वदेस-अवनति प्रचंड पातक अधिकारी॥

छायावाद (सन् 1918 से 1936 ई०)

- हिन्दी में सर्वप्रथम पं० मुकुटधर पाण्डेय ने जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका में सन् 1920 ई० में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से चार किस्तों में एक लेख प्रकाशित करवाया।
- मुकुटधर पाण्डेय को लिखित रूप में 'छायावाद' शब्द का प्रथम प्रयोक्ता स्वीकार किया जाता है।
- सन् 1920 ई० में सुशील कुमार ने 'सरस्वती' में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से एक संवादात्मक लेख प्रकाशित करवाया। इस संवाद में चार लोगों ने भाग लिया है—(1) सुशीला देवी, (2) हरिकिशोर बाबू, (3) चित्रकार रामनरेश जोशी तथा (4) सुमित्रानन्दन पंत।
- छायावाद की विभिन्न परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(1) **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**—छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ इसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से है, अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।

(2) **नंददुलारे वाजपेयी**—मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।

(3) **जयशंकर प्रसाद**—जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं।

(4) **महादेवी वर्मा**—छायावाद तत्त्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्‌गीथ है। उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।

(5) **डॉ० नगेन्द्र**—छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। वह एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है और जीवन के प्रति विशेष प्रकार का भावनात्मक दृष्टिकोण।

(6) **डॉ० रामविलास शर्मा**—छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा है, वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती साम्राज्यवादी बंधनों के प्रति विद्रोह रहा है। परन्तु यह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वावधान से हुआ था। इसलिए उसके साथ मध्यवर्गीय असंगति, पराजय और पलायन की भावना भी जुड़ी हुई है।

(7) **डॉ० नामवर सिंह**—छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति है, जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

(8) **डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी**—वह (छायावाद) मूलत: शक्ति काव्य है, पुनर्जागरण चेतना का व्यापक और सूक्ष्म रूप है और अपनी अर्थ-प्रक्रिया में मानव व्यक्तित्व को गहरे स्तरों पर समृद्ध करता है।

- छायावाद के प्रवर्तक और प्रस्तोता निम्नलिखित हैं—

प्रस्तोता	**प्रवर्तक**
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय
आचार्य नंददुलारे वाजपेयी	सुमित्रानन्दन पंत
प्रभाकर माचवे	माखनलाल चतुर्वेदी
इलाचन्द्र जोशी व अन्य विद्वान	जयशंकर प्रसाद

छायावादी कवि

- छायावाद के कवि चतुष्टय में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा आती हैं।
- छायावाद के वृहत्त्रयी तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश निम्न हैं—

ब्रह्मा	जयशंकर प्रसाद
विष्णु	सुमित्रानंदन पंत
महेश	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

- छायावाद की लघुत्रयी में महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और भगवती चरण वर्मा आते हैं।

- जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त जीवन-वृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	माता-पिता	गुरु	बाल्यनाम/उपनाम
1889-1937	देवीप्रसाद-मुन्नीदेवी	मोहिनीलाल	झारखंडी/कलाधर

- जयशंकर प्रसाद की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) उर्वशी (1909 ई०), (2) वन मिलन (1909 ई०), (3) प्रेमराज्य (1909 ई०), (4) अयोध्या का उद्धार (1910 ई०), (5) शोकोच्छ्वास (1910 ई०), (6) वभ्रुवाहन (1911 ई०), (7) कानन कुसुम (1913 ई०), (8) प्रेम पथिक (1914 ई०), (9) महाराणा का महत्व (1914 ई०), (10) चित्राधार (1918 ई०), (11) झरना (1918 ई०), (12) आँसू (1925 ई०), (13) लहर (1933 ई०), (14) कामायनी (1935 ई०)
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कविता 'सावन-पंचक' सन् 1906 ई० में 'भारतेन्दु पत्रिका में कलाधर उपनाम से प्रकाशित हुई।
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम छायावादी कविता 'प्रथम प्रभात' सन् 1918 ई० में प्रकाशित हुई जो झरना में संकलित है।
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम पुस्तकाकार रचना 'उर्वशी' है। यह चंपूकाव्य है।
- खड़ी बोली में जयशंकर प्रसाद का प्रथम काव्य संग्रह 'कानन-कुसुम' है।

- जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'झरना' को छायावाद की प्रथम रचना स्वीकार किया जाता है। इसको 'छायावाद की प्रथम प्रयोगशाला' भी कहा जाता है।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'आँसू' 133 छन्दों का विरह प्रधान स्मृति काव्य है। इसे 'हिन्दी का मेघदूत' कहा जाता है।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'चित्राधार' में इनकी ब्रज में रचित कविताएँ संकलित हैं।
- प्रसाद कृत 'प्रेम पथिक' प्रथमतः ब्रजभाषा में सन् 1909 में लिखा गया था जिसका इन्होंने खड़ी बोली में अनुवाद सन् 1914 में किया।
- जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' महाकाव्य का संक्षिप्त विवरण निम्न है—

सर्ग	अंगीरस	दर्शन	मुख्य पात्र	मुख्य छंद
15 सर्ग	शांत (निर्वेद) रस	समरसतावाद-आनंदवाद	मनु, श्रद्धा, इड़ा, कुमार	तांटक छंद

- **कामायनी के सर्ग**—(1) चिन्ता, (2) आशा, (3) श्रद्धा, (4) काम, (5) वासना, (6) लज्जा, (7) कर्म, (8) ईर्ष्या, (9) इड़ा, (10) स्वप्न, (11) संघर्ष, (12) निर्वेद, (13) दर्शन, (14) रहस्य, (15) आनन्द

प्रतीक -	पात्र	
मन	मनु	कामायनी के पात्र
हृदय	श्रद्धा	
बुद्धि	इड़ा	
मानव	कुमार	

- आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने 'कामायनी' को छायावाद का उपनिषद कहा है।
- जयशंकर प्रसाद को प्रेम और सौन्दर्य का कवि माना जाता है।
- महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्न है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	पिता	पत्नी	पुत्री
1899–1961	महिषादल (मेदनीपुर)	इलाहाबाद	रामसहाय त्रिपाठी	मनोहरा देवी	सरोज

- निराला की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) अनामिका (1923 ई०), (2) परिमल (1930 ई०), (3) गीतिका (1936 ई०), (4) तुलसीदास (1938 ई०), (5) कुकुरमुत्ता (1942 ई०), (6) अणिमा (1943 ई०), (7) बेला (1946 ई०), (8) नये पत्ते (1946 ई०), (9) अर्चना (1950 ई०), (10) आराधना (1953 ई०), (11) गीतगुंज (1954 ई०), (12) सांध्यकाकली (1969 ई०)।
- निराला के काव्य संसार में प्रथम व अन्तिम तथ्य निम्नांकित है—

प्रथम संग्रह	अन्तिम संग्रह	प्रथम कविता	अन्तिम कविता
अनामिका	सांध्यकाकली	जूही की कली (1916 ई०)	पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है

- निराला कृत 'अनामिका' और परिमल में संकलित महत्वपूर्ण कविताएँ निम्न हैं—

अनामिका (द्वितीय संस्करण, 1938)
- सरोज स्मृति (1935 ई०)
- सम्राट एडवर्ड के प्रति
- प्रेयसी
- राम की शक्तिपूजा (1936 ई०)
- रेखा
- तोड़ती पत्थर
- सच है (1935 ई०)

परिमल
- अधिवास
- जुही की कली
- बादल राग
- विधवा
- भिक्षुक
- संध्या सुन्दरी
- पंचवटी प्रसंग

- पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को हिन्दी में मुक्त छंद का प्रवर्तक माना जाता है। कुछ आलोचक मुक्त छंद को 'रबर' या 'केंचुआ छंद' भी कहते हैं।
- निराला ने 'कवित्त' को 'हिन्दी का जातीय छंद' कहा है।
- निराला ने 'परिमल' की भूमिका में लिखा है, "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।"
- निराला कृत 'सरोज-स्मृति' को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ तथा प्रथम शोकगीत माना जाता है।
- निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' महाकाव्य का उपजीव्य बांग्ला ग्रन्थ 'कृतवास रामायण' है।
- निराला कृत 'तुलसीदास' 101 छंदों में रचित एक खण्ड काव्य है।
- निराला ओज, औदात्य और विद्रोह के कवि हैं।
- निराला अकुंठ एवं वयस्क शृंगार-दृष्टि तथा तृप्ति के कवि हैं।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार, "बहुवस्तुस्पर्शिनी प्रतिभा निरालाजी में है।"
- प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नांकित हैं—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	बाल्य नाम	प्रथम कविता
1900–1977	कौशानी (अल्मोड़ा)	इलाहाबाद	गुसाई दत्त	गिरजे का घंटा (1916 ई०)

- सुमित्रानन्दन पंत के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है जो निम्न हैं—

  छायावादी—उच्छ्वास (1920 ई०), ग्रंथि (1920 ई०), वीणा (1927 ई०), पल्लव (1928 ई०), गुंजन (1932 ई०)।

  प्रगतिवादी—युगान्त (1936 ई०), युगवाणी (1939 ई०), ग्राम्या (1940 ई०)।

  अन्तश्चेतनावादी—स्वर्ण किरण (1947 ई०), स्वर्ण धूलि (1947 ई०), युग पथ (1949 ई०)।

  नवमानवतावादी—उत्तरा (1949 ई०), कला और बूढ़ा चाँद (1959 ई०), अतिमा (1955 ई०), लोकायतन (1964 ई०), चिदम्बरा।
- सुमित्रानन्दन की प्रथम छायावादी रचना 'उच्छ्वास' है तथा अन्तिम छायावादी रचना 'गुंजन' है।
- सुमित्रानन्दन पंत ने 'लोकायतन' नामक महाकाव्य महात्मा गाँधी के जीवन पर लिखा है।
- सुमित्रानन्दन की महत्वपूर्ण कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' शीर्षक से प्रकाशित है। इस पर इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

- सुमित्रानंदन कृत 'पल्लव' की भूमिका को छायावाद का घोषणा पत्र (मेनीफेस्टो) कहा जाता है।
- पंत जी को 'संवेदनशील इन्द्रिय बोध का कवि' कहा जाता है।
- सुमित्रानन्दन पंत मूल रूप में अरविन्द दर्शन से प्रभावित थे।
- महादेवी वर्मा का संक्षिप्त जीवनवृत्त निम्नांकित है—

जन्म-मृत्यु (ई०)	जन्मस्थान	मृत्यु स्थान	पिता	उपाधि
1907–1987	फर्रुखाबाद	इलाहाबाद	गोविन्द प्रसाद	आधुनिक युग की मीरा

- महादेवी वर्मा को 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणा पाणि' कहा जाता है।
- महादेवी की महत्त्वपूर्ण काव्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—
  (1) नीहार (1930 ई०), (2) रश्मि (1932 ई०), (3) नीरजा (1935 ई०), (4) सांध्यगीत (1936 ई०), (5) यामा (1940 ई०), (6) दीपशिखा (1942 ई०), सप्तपर्णा (1960 ई०)।
- महादेवी वर्मा कृत 'यामा' में उनके नीहार, रश्मि, नीरजा और सांध्यगीत के महत्वपूर्ण गीतों का संकलन किया गया है। 'यामा' पर महादेवी वर्मा को 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।
- महादेवी वर्मा कृत 'सप्तपर्णा' में ऋग्वेद के मंत्रों का हिन्दी काव्यानुवाद संकलित है।

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने महादेवी के प्रथम काव्य-संकलन 'नीहार' की भूमिका सन् 1930 ई० में लिखी थी।
- महादेवी वर्मा की ब्रजभाषा और आरम्भिक खड़ी बोली की कविताओं का संकलन सन् 1984 ई० में 'प्रथम आयाम' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
- महादेवी वर्मा को बौद्ध दर्शन से प्रभावित रहस्यवादी कवयित्री के रूप में स्वीकार किया जाता है। इनका सर्वाधिक प्रिय प्रतीक दीपक और बादल हैं।
- छायावाद के अन्य कवि निम्नांकित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
उदयशंकर भट्ट	1898–1966	राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष, यथार्थ और कल्पना।
मोहनलाल महतो वियोगी	1899–1990	निर्माल्य (1926 ई०), एक तारा, कल्पना (1935 ई०)।
लक्ष्मीनारायण मिश्र	1903	अन्तर्जगत्।
डॉ० रामकुमार वर्मा	1905–1990	रूपराशि (1931 ई०), निशीथ, चित्ररेखा (1935 ई०), आकाशगंगा।
जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'		अनुभूति, अन्तर्ध्वनि।
गोपाल सिंह नेपाली	1913–1963	पंछी, रागिनी, उमंग (1934 ई०)।
केदारनाथ मिश्र	-1907–1984	चिर स्पर्श, सेतुबंध।
आरसी प्रसाद सिंह	1911	कलापी (1938 ई०), संचयिता

(1942 ई०), जीवन और यौवन (1944 ई०), नई दिशा (1944 ई०), पांचजन्य (1945 ई०), प्रेमगीत (1954 ई०)।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवि : काल क्रमानुसार

❑ राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों का कालक्रमानुसार विवरण निम्न है—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
माखनलाल चतुर्वेदी	1889–1968	हिमकिरीटिनी (1943 ई०), हिमतरंगिनी (1949 ई०), माता (1951 ई०), समर्पण (1956 ई०)।
सियारामशरण गुप्त	1895–1963	मौर्य विजय (1914 ई०), अनाथ (1917 ई०), दूर्वादल (1924 ई०), विषाद (1925 ई०), आर्द्रा (1927 ई०), आत्मोत्सर्ग (1931 ई०), पाथेय (1933 ई०), मृण्मयी (1936 ई०), बापू (1937 ई०), उन्मुक्त (1940 ई०), दैनिकी (1942 ई०), नकुल (1946 ई०)।
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	1897–1960	कुंकुम (1939 ई०), रश्मि रेखा, अपलक, क्वासी, हम विषपायी जनम के, विनोबा स्तवन, ऊर्मिला।

सुभद्राकुमारी चौहान	1905–1948	त्रिधारा, मुकुल (1931 ई०)।
जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द	1907–1986	जीवन संगीत (1940 ई०), नवयुवक के गान।
महेशचन्द्र प्रसाद		कांग्रेस–शतक।

- माखनलाल चतुर्वेदी को 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है।
- माखनलाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता 'कैदी और कोकिला', 'पुष्प की अभिलाषा' आदि है।
- सियारामशरण गुप्त राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे।
- सियारामशरण गुप्त की प्रथम कविता 'इन्दु' में सन् 1910 ई० में प्रकाशित हुई।
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' उपनाम से कविता लिखते थे। इनका प्रथम काव्य संग्रह 'कुंकुम' है।
- सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था।
- सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविताएँ निम्न हैं—
  (1) झाँसी की रानी, (2) झण्डे की इज्जत में, (3) स्वदेश के प्रति, (4) जालियाँवाला बाग।

प्रेम और मस्ती का काव्य (व्यक्तिवादी कवि)

❑ प्रेम और मस्ती के कवियों का विवरण निम्नांकित हैं—

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
भगवतीचरण शर्मा	1903–1981	मधुकण (1932 ई०), प्रेम-संगीत (1937 ई०), मानव (1940 ई०), एक दिन।
हृदयनारायण 'हृदयेश'	1905	स्फुट गीत।
हरिवंशराय बच्चन	1907–2003	मधुशाला (1935 ई०), मधुबाला (1936 ई०), मधुकलश (1937 ई०), निशा निमंत्रण (1938 ई०), एकान्त संगीत (1939 ई०), आकुल अंतर (1943 ई०), सतरंगिनी (1945 ई०), बंगाल का अकाल (1946 ई०), हलाहल (1946 ई०), खादी के फूल (1948 ई०), मिलन यामिनी (1950 ई०)।
हरिकृष्ण प्रेमी	1908	अग्निगान, वन्दना के बोल, आँखों में, अनन्त के पथ पर।
नरेन्द्र शर्मा	1913–1991	प्रभातफेरी (1938 ई०), प्रवासी के गीत (1938 ई०), पलाश वन (1939 ई०), मिट्टी और फूल (1942 ई०), कामिनी (1942 ई०), हंसमाला (1946 ई०), रक्तचंदन (1949 ई०), अग्निशस्य (1951 ई०)।
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	1915–1996	मधुलिका (1938 ई०), अपराजिता (1939 ई०), किरणबेला (1941 ई०), करील (1942 ई०), लाल चूनर (1944 ई०), वर्षान्त के बादल।

- बच्चनजी को हिन्दी का 'बायरन' भी कहा जाता है।
- रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को हिन्दी में मांसलवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

छायावाद के हास्य-व्यंग्यकार कवि

- छायावाद के प्रमुख हास्य व्यंग्यकार कवि निम्न हैं—

रचनाकार	रचनाएँ
ईश्वरी प्रसाद शर्मा	(1) चना चबेना (1924 ई०)
हरिशंकर शर्मा	(1) पिंजरापोल, (2) चिड़ियाघर
कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच'	(1) चोंच चालीसा, (2) पानी पांडे, (3) महाकवि सांड।
शिवरत्न शुक्ल 'बलई'	(1) परिहास प्रमोद (1930 ई०)
चतुर्भुज चतुरेश	(1) हँसी का फव्वारा
ज्वालाराम नागर 'विलक्षण'	(1) छायापथ

- हरिशंकर शर्मा कृत 'पिंजरा पोल' और 'चिड़ियाघर' गद्य-रचना है इसमें कुछ व्यंग्यात्मक कविताएँ संकलित हैं।

छायावाद : ब्रजभाषा काव्य — कालक्रमानुसार

कवि	जन्म-मृत्यु	रचनाएँ
रामनाथ ज्योतिषी	1874	(1) रामचन्द्रोदय काव्य (1936 ई०)
रामचन्द्र शुक्ल	1884–1941	(1) बुद्धचरित (1922 ई०)
रायकृष्णदास	1892	(1) ब्रजरज (1936 ई०)
दुलारेलाल भार्गव	1895	(1) दुलारे दोहावली
वियोगी हरि	1896–1988	(1) वीर सतसई (1927 ई०), (2) चरखा स्तोत्र
किशोरीदास वाजपेयी	1898–1981	(1) तरंगिणी (1936 ई०)
अनूप शर्मा	1900	(1) फेरि मिलिबौ (1938 ई०), चम्पू काव्य
रामेश्वर करुण	1901	(1) करुण सतसई

- रामचन्द्र शुक्ल ने एडविन अर्नाल्ड के काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का 'बुद्धचरित' शीर्षक से ब्रजभाषा में अनुवाद किया।

छायावादी कवियों की महत्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

(क) जयशंकर प्रसाद (आँसू से)

(1) बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ है हीरों से॥

(2) विद्रुम-सीपी-संपुट में मोती के दाने कैसे?
है हंस न, पर शुक फिर क्यों चुगने के मुक्ता ऐसा।

(3) झंझा झकोर गर्जन है, बिजली है नीरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को, सबने आ डेरा डाला॥

(4) पतझड़ था, झाड़ खड़े थे सूखे से फुलवारी में।
किसलयदल कुसुम बिछाकर आए तुम इस क्यारी में॥

(5) इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती ?

(6) मानव जीवन वेदी पर परिणय हो विरह मिलन का।
दुःख सुख दोनों नाचेंगे है खेल आँख का मन का॥

(7) जल उठा स्नेह दीपक-सा, नवनीत हृदय था मेरा।
अब शेष धूम रेखा से, चित्रित कर रहा अँधेरा॥

(8) तेरे प्रकाश में चेतन संसार वेदना वाला।
मेरे समीप होता है पाकर कुछ करुण उजाला॥

(9) सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में।
बरसो प्रभात हिमकन-सा आँसू इस विश्व सदन में॥

'लहर' से

(10) उठ उठ, गिर गिर, फिर फिर आती
नर्तित पदचिह्न बना जाती;
सिकता की रेखाएँ उभार
भर जाती अपनी तरल सिहर।

(11) तुम हो कौन और मैं क्या ? इसमें क्या है धरा सुनो।
मानस जलधि रहे चिर चुंबित मेरे क्षितिज ! उदार बनो ॥

(12) ले चल वहाँ भुलावा देकर मेरे नाविक ! धीरे धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी अंबर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो तज कोलाहल की अवनी रे ॥

(13) श्रम विश्राम क्षितिज बेला से, जहाँ सृजन करते मेला से—
अमर जागरण, उषा नयन से—बिखराती हो ज्योति घनी रे ॥

(14) बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी।
खगकुल 'कुल कुल' सा बोल रहा, किसलय का अंचल डोल रहा।
लो, यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी ॥

(15) मेरा अनुराग फैलने दो, नभ के अभिनव कलरव में,
जाकर सूनेपन के तम में, बन किरण कभी आ जाना।

(16) जग की सजल कालिमा रजनी में मुखचन्द्र दिखा जाओ;
प्रेम वेणु की स्वर लहरी में जीवन गीत सुना जाओ।

'कामायनी' से

(17) ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी विस्फोट के भीषण प्रथम कंप-सी मतवाली ॥

(18) बुद्धि, मनीषा, मति आशा, चिन्ता तेरे हैं कितने नाम !
अरी पाप है तू, जा, चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम !

(19) सिन्धु सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी,
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किए सी ऐंठी-सी॥
(20) संवेदन का और हृदय का यह संघर्ष न हो सकता,
फिर अभाव असफलताओं की गाथा कौन कहाँ बकता!
(21) फटा हुआ था नील वसन क्या ओ यौवन की मतवाली!
देख अंकिचन जगत लूटता तेरी छवि भोली भाली!
(22) हृदय की अनुकृति बाह्य उदार एक लंबी काया उन्मुक्त।
मधु-पवन-क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ संयुक्त॥
(23) नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग॥
(24) नित्य-यौवन छवि से ही दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति।
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति॥
(25) कुसुम कानन अंचल में मंद-पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित-परमाणु-पराग-शरीर खड़ा हो, ले मधु का आधार॥
(26) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम॥
(27) एक तुम, यह विस्तृत भू-खण्ड प्रकृति वैभव से भरा अमंद।
कर्म का भोग, भोग का कर्म यही जड़ का चेतन आनन्द।

(28) शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त विकल बिखरे हैं हो निरुपाय,
समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाए!
(29) कोमल किसलय के अंचल में नन्हीं कलिका ज्यों छिपती-सी,
गोधूली के धूमिल पट में दीपक के स्वर में दीपती-सी।
(30) मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ मैं शालीनता सिखाती हूँ।
मतवाली सुन्दरता पग में नूपुर सी लिपट मनाती हूँ॥
(31) नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में॥
(32) आँसू से भींगे अंचल पर मन का सब कुछ रखना होगा—
तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधि पत्र लिखना होगा।
(33) तुम भूल गए पुरुषत्व-मोह में कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।
(34) बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल—
यह विश्व मुकुट-सा उज्ज्वलतम शशिखण्ड सदृश था स्पष्ट भाल
(35) दो पद्म-पलाश चषक से दृग देते अनुराग विराग ढाल॥
(36) जो बुद्धि कहे उनको न मानकर फिर किसकी नर शरण जाए।
(37) वह विज्ञानमयी अभिलाषा, पंख लगाकर उड़ने की,
जीवन की असीम आशाएँ कभी न नीचे मुड़ने की॥

(38) प्रकृति-शक्ति तुमने यंत्रों से सबकी छीनी।
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जन झीनी।
(39) स्वप्न, स्वाप, जागरण भस्म हो इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे।
दिव्य अनाहत पर-निनाद में श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे॥
(40) समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड घना था।

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (*'राम की शक्ति पूजा' से*)

(1) ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत।
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत॥
(2) है अमा-निशा; उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन चार।
(3) लख शंकाकुल हो गये अतुल-बल शेष-शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।
(4) काँपते हुए किसलय—झरते पराग समुदय,
गाते खग नव जीवन-परिचय, तरु मलय वलय,
ज्योति प्रपात स्वर्गीय, ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कंपन तुरीय।
(5) धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।
(6) अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति। कहते छल-छल।
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल॥
(7) शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!
(8) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

'सरोज स्मृति' से

(9) अशब्द अधरों का सुना भाष,
मैं कवि हूँ, पाया है प्रकाश।

(10) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था, कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर हारता रहा मैं स्वार्थ समर।

(11) यह हिन्दी का स्नेहोपहार, यह नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार-लोकोत्तर वर।

(12) एक साथ जब शत घातघूर्ण, आते थे मुझ पर तुले तूर्ण
देखता रहा मैं खड़ा अपल, वह शर-क्षेप, वह रण कौशल।

(13) तब भी मैं इसी तरह समस्त, कवि-जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त।
लिखता अबाध-गति मुक्त छंद, पर सम्पादकगण निरानंद॥

(14) धीरे धीरे फिर बढ़ा चरण, बाल्य की केलियों का प्रांगण।
कर पार, कुंज-तारुण्य सुघर आइ, लावण्य-भार थर-थर॥

(15) क्या दृष्टि! अतल की सिक्तधार ज्यों भोगावती उठी अपार,
उमड़ता ऊर्ध्व को कल सलील जल टलमल करता नील नील
पर बँधा देह के दिव्य-बाँध, छलकता दृगों के साध-साध॥

(16) ये कान्यकुब्ज-कुल-कुलांगार खाकर पत्तल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद।

(17) देखा मैंने, वह मूर्ति-धीति मेरे वसंत की प्रथम गीति-
शृंगार, रहा जो निराकार, रस कविता में उच्छ्वसित-धार
गाया स्वर्गीया-प्रिया-संग भरता प्राणों में राग रंग
रति-रूप प्राप्त कर रहा वही आकाश बदलकर बना मही॥

(18) दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

'तुलसीदास' से

(19) भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे—तमस्तूर्य दिङ्मंडल
उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान;
है ऊर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शतदल।

(20) होगा फिर से दुर्धर्ष समर
जड़ से चेतन का निशिवासर,
कवि का प्रति छवि से जीवन हर, जीवन भर;
भारती इधर, है उधर सकल
जड़ जीवन के संचित कौशल;
जय, इधर ईश, हैं उधर सबल माया-कर।

(21) जागो, जागो आया प्रभात, बीती वह बीती अंध रात,
झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वाचल,
बाँधो, बाँधो किरणें चेतन, तेजस्वी, है तमजिज्जीवन;
आती भारत की ज्योतिर्धन महिमाबल॥

'बादल राग' से (सं० रामविलास शर्मा)

(22) जागो फिर एक बार
शेरों की माँद में आया है आज स्यार

(23) विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह स्वप्न मग्न अमल कोमल तनु तरुणी,
जुही की कली
दृग बंद किए शिथिल पत्रांक में (जूही की कली)

(24) स्नेह निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।

(25) यौवन के तीर पर प्रथम था आया जब
स्रोत सौन्दर्य का,
वीचियों कलरव सुख चुंबित प्रणय का
था मधुर आकर्षणमय
मज्जनावेद मृदु फूटता सागर में॥

(26) जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ए विप्लव के वीर!

(ग) सुमित्रानंदन पंत

(1) छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

(2) प्रथम रश्मि का आना रंगिणी! तूने कैसे पहचाना?
कहाँ कहाँ हे बाल विहंगिनी! पाया तूने यह गाना?

(3) अरुण अधरों की पल्लव प्रात,
मोतियों सा हिलता हिम हास।

(4) सैकत-शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म, विरल,
लेटी है श्रांत, क्लान्त निश्चल!
तापस-बाला गंगा निर्मल, शशि-मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुंतल!

(5) इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम!

(6) तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि त्रिवेणी की लहरों गान॥

(7) धूम धुंआरे काजर कारे हम ही बिकरारे बादर।
मदनराज के वीर-बहादुर, पावस के उड़ते फणिधर॥

(8) धूलि की ढेरी में अनजान छिपे हैं मेरे मधुमय गान।

(9) वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान॥

(10) द्रुत झरों जगत के जीर्ण पत्र, हे स्रस्त ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण।
हिम ताप पीत मधुवात भीत, तुम वीतराग जड़ पुराचीन॥

(11) लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर।
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर॥

(12) दूर उन खेतों के उस पार, जहाँ तक गई नील झंकार॥

(13) तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार।
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार!

(14) भूतवाद उस धरा-स्वर्ग के लिए मात्र सोपान,
जहाँ आत्मदर्शन अनादि से समासीन अम्लान॥

(15) सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्।

(घ) महादेवी वर्मा

(1) मैं नीर भरी दु:ख की बदली
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली॥

(2) पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा तुममे ढूँढूँगी पीड़ा।

(3) जो तुम आ जाते एक बार!
कितनी करुणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग।

(4) क्या पूजा क्या अर्चन रे ?
उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।

(5) मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

(6) मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।

(7) बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
दूर हूँ तुमसे अखण्ड सुहागिनी भी हूँ॥

(8) विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना
जाग तुझको दूर जाना॥

(9) वे मुस्काते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना।
वे तारों के दीप नही जिनको भाता है बुझ जाना॥